AUS2A10a-hindoustani-2012-11-26

जैन घर्म की रीति-परंपरा

जैन धर्म भारत की श्रमण परम्परा से निकला धर्म और दर्शन है । 'जैन' का मतलब है वे जो 'जिन' के अनुयायी हों। 'जिन' शब्द 'जि' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'जीतना'। यानी जिसने अपने मन, अपनी वाणी और अपने शरीर को जीत लिया हो वही जैन होता है। इस प्रकार जैन धर्म का अर्थ है 'जिन' भगवान का धर्म। जैन तीर्थंकरों में ये गुण थे, इसलिए इनके द्वारा चलाया गया धर्म जैन धर्म कहलाया। नंगे बदन रहना, शुद्ध शाकाहारी भोजन करना और निर्मल वाणी बोलना किसी भी जैन-अनुयायी की पहली पहचान होती है।

सम्प्रदाय

ईसा की तीसरी सदी में जैन परंपरा दो भागों में बँट गयी : दिगंबर और श्वेताम्बर। कहा जाता है कि आचार्य भद्रबाहु को अपने ज्ञान के बल पर पता चला कि उत्तर भारत में 12 वर्ष का अकाल पड़ने वाला है। इसलिए उन्होंने सभी साधुओं को निर्देश दिया कि इस भयानक अकाल से बचने के लिए दक्षिण भारत की ओर जाना चाहिए। आचार्य भद्रबाहु के साथ हजारों जैन मुनि (जिन्हें श्रमण कहा जाता है) तमिलनाडु और कर्नाटक की ओर चले गए और अपनी साधना में लगे रहे। परन्तु कुछ जैन साधु उत्तर भारत में ही रुक गए। अकाल के कारण यहाँ रुके हुए साधुओं का जीवन घर्म के अनुरूप नहीं चल पा रहा था इसलिए उन्होंने अपनी कई नई परंपराएँ शुरु कर दी। जैसे कटि-वस्त्र धारण करना, 7 घरों से भिक्षा ग्रहण करना, 14 उपकरण साथ में रखना आदि। 12 वर्ष बाद दक्षिण से लौट कर आये साधुओं ने उत्तर भारत के साधुओं को समझाया कि आप लोग पुनः तीर्थंकर महावीर की परम्परा को अपना लें। पर साधु राजी नहीं हुए और तब जैन धर्म में दिगंबर और श्वेताम्बर दो सम्प्रदाय पैदा हो गए। (1) दिगम्बर - दिगम्बर मुनि (श्रमण) कपड़े नहीं पहनते है। वे नंगे रहते हैं। इसी प्रकार तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ भी पूरी तरह से नंगी बनायी जाती हैं और उनका कोई श्रृंगार नहीं किया जाता है। पूजा में फल और फूल नहीं चढाए जाते हैं। (2) श्वेताम्बर - श्वेताम्बर संन्यासी सफ़ेद कपड़े पहनते हैं। तीर्थकरों की प्रतिमाएँ लँगोट और धातु की आँख, कुंडल सहित बनायी जाती हैं और उनका श्रृंगार किया जाता है।

जैनों का मानना है कि उनका धर्म अनादि और सनातन है। ऐसा माना जाता है कि जैन घर्म का मूल उन प्राचीन पंरपराओं में रहा होगा, जो आर्यों के आगमन से पूर्व इस देश में प्रचलित थीं। ये श्रमण वैदिक परंपरा के विरुद्ध थे। महावीर तथा बुद्ध के काल में ये श्रमण कुछ बौद्ध तथा कुछ जैन हो गए। भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर वर्धमान हुए, जिनका जन्म ई.पू. 599 में हुआ था। इनकी मृत्यु 72 वर्ष की उम्र में हुई। महावीर स्वामी ने मरने से पहले जैन धर्म की नींव काफी मजबूत कर दी थी। अहिंसा को उन्होंने जैन धर्म में अच्छी तरह स्थापित कर दिया था। उन्हीं के समय से इस संप्रदाय का नाम जैन हो गया। अशोक के अभिलेखों से यह पता चलता है कि उसके समय में मगध में जैन धर्म का प्रचार था। जैन लोग शांतिप्रिय स्वभाव के होते थे। इसी कारण मुगल शासन काल में इन पर बहुत अत्याचार नहीं हुए। मालूम होता है कि अकबर ने जैन अनुयाइयों की थोड़ी-बहुत मदद भी की थी। मगर धीरे-धीरे जैनियों के मठ टूटने एवं बिखरने लगे। जैन धर्म भारतीय धर्म है लेकिन भारत के अलावा पूर्वी अफ्रीका में भी जैन धर्म के अनुयायी रहते हैं।

पार्श्वनाथजी के अनुसार चार महाव्रत हैं- (1) अहिंसा (2) सत्य (3) अस्तेय और (4) अपरिग्रह। बाद में चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान महावीर ने इन महाव्रतों में ब्रह्मचर्य को भी जोड़ा। इस प्रकार जैन धर्म के पाँच महाव्रत हो गए। जैन धर्म में भिक्षुओं के लिए इन पाँच महाव्रतों का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। वास्तव में जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा ही है। मन वचन और कर्म से किसी को दु:ख या कष्ट न पहुँचाना ही अहिंसा है। जैन घर्म के अनुसार जिनकी इंद्रियाँ जितनी कम विकसित होती हैं, उनको शरीर त्याग में उतना ही कम कष्ट होता है। इसलिए 'एक इंद्रिय' जीवों जैसे वनस्पति, कंद, फूल-फल आदि को ही जैन लोग स्वीकार करते हैं। जैन धर्म में आचार-विचार का बड़ा ध्यान रखा जाता है। छोटे-से-छोटे काम के लिए धार्मिक एवं नैतिक नियमों का पालन करना होता है। जैन धर्म की मान्यताओं के अनुसार विश्व सदैव से है, सदैव रहा है और सदैव बना रहेगा।